विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 13-02-2021

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

काव्यशास्त्र विनोदेन,कालो गच्छति धीमताम् ।

व्यसनेन च मूर्खाणाम् ,निद्रया कलहेन वा ।।

बुद्धिमान लोग अपनी समय साहित्य एवं दर्शन का अध्ययन करने में व्यतीत करते हैं । जबकि मूर्ख लोग अपनी समय बुरी आदतों जैसे निद्रा, कलह एवं व्यसन में व्यतीत करते हैं ।

अधमा धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः।

उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम्।।

अधम धन की इच्छा करतें हैं,

मध्यम धन और मान चाहते हैं,

किन्तु उत्तम केवल मान चाहते हैं

महापुरुषों का धन मान ही है ।

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् |

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ||

अर्थात् :

महर्षि वेदव्यास जी ने अठारह पुराणों में दो विशिष्ट बातें कही हैं | पहली -परोपकार करना पुण्य होता है और दूसरी – पाप का अर्थ होता है दूसरों को दुःख देना |